आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 3 नवम्बर, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुपालन क्षेत्र में आधुनिक सूचना एवं संचार तकनीकों का समावेश जरूरी: कुलपति

भारत की आधी से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है जिसकी रोजी–रोटी व आजीविका का प्रमुख साधन कृषि व पशुपालन है। देश की आर्थिक उन्नति का मार्ग गांवों से होकर जाता है। वर्तमान परिदृश्य में भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहां कृषि व पशुपालन एक तरफ भोजन व पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करता है, दूसरी तरफ आय व रोजगार के निरन्तर अवसर प्रदान करता है, यदि भारत को खुशहाल बनाना है तो गांवों को विकसित करना होगा। ग्रामीण क्षेत्र बेहत्तरी की दिशा में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए परम्परागत तकनीकों के स्थान पर आधुनिक तकनीकों पर जोर दिया जा रहा है। आज मानव जीवन सूचना व संचार तकनीकों से अछूता नही है। संचार क्रांति के इस दौर में कृषि व पशुपालन भी प्रभावित हुआ है। हांलाकि कृषि व पशुपालन में आईटी की भागीदारी अभी बहुत कम है। इन दिनों जनसंख्या वृद्वि, अधिक शहरीकरण और बढ़ती आय के कारण पशुओं के उत्पादों की मांग तेजी से बढ़ रही है। इस बढती मांग की पूर्ति हेतु पशुपालन व कृषि में संचार तकनीकों का समावेश बहुत आवश्यक हो गया है। पशुपालकों को सही समय पर सही तरीके से जानकारी व ज्ञान की उपलब्धता अधिक उत्पादकता और अधिक लाभप्रदता की ओर ले जा सकती है। पशुपालन के क्षेत्र में आईटी आधारित सूचना वितरण द्वारा पशुपालक के गुणवत्तापूर्वक निर्णय लेने की समझ एवं ज्ञान में काफी सुधार किया जा सकता है। संचार तकनीकों के द्वारा मौसम पूर्वानुमान, पशुओं के आवास में नवाचार, पशुधन रोग निंयत्रण, प्रजातियों की नस्लों के विवरण, डेयरी प्रबंधन, रोग पूर्वानुमान, टीकाकरण, पशुधन उत्पादन, पशुधन उत्पादों के विपणन इत्यादि के बारे में जानकारी आदान–प्रदान की जा सकती है। वैज्ञानिक संदेश नवीन तकनीक एवं आवश्यक सूचनाएं तुरंत इच्छुक उपयोगकर्ता तक पहुंचाने के लिए धन व समय की बचत करता है तथा संचार तकनीक की दुनिया के किसी भी हिस्से से किसी विशेष पशुधन समस्या पर नवीनतम जानकारी जानने और सर्वोत्तम वैज्ञानिक विशेषज्ञ के साथ चर्चा में महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती है। संचार तकनीकों के महत्व को समझते हुए किसानों व पशुपालकों तक नवीनतम कृषि व पशुपालन सम्बन्धी जानकारियों के प्रसार हेतु वेब आधारित पोर्टल, वेबसाइट, मोबाइल एप, वाट्सएप समूह बनाये गये हैं। विश्वविद्यालय भी कृषि व ग्रामीण विकास में डिजीटल इण्डिया के दृष्टिकोण को साकार करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के अधीन विभिन्न जिलों में स्थित पशु विज्ञान केन्द्रों व कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा किसानों व पशुपालकों के वाट्सएप समूह बनाये गये हैं, जो किसानों व पशुपालकों को पशुपालन प्रबंधन, रोग नियंत्रण सम्बन्धी तकनीकों की जानकारियां समय पर उपलब्ध करवाते हैं तथा पशुपालक भाई विश्वविद्यालय की टोल फ्री हेल्पलाइन पर सम्पर्क कर पशुपालन से सम्बन्धित नवीन तकनीकों की जानकारी ले सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

पशु उत्पादों का मूल्यसंवर्धन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

पशु उत्पादों का मूल्यसंवर्धन मानव स्वास्थ्य और उद्यमशीलता में सुधार के लिए जरूरी : कुलपति प्रो. गर्ग

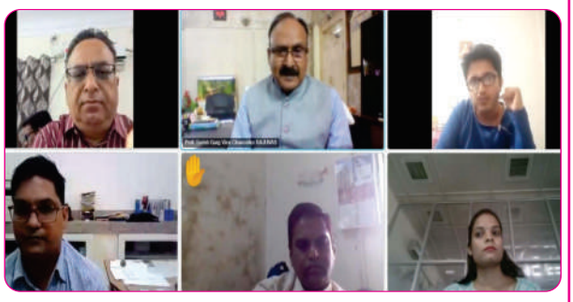

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान (मैनेज), हैदराबाद के संयुक्त तत्वावधान में "पशु उत्पादों का मूल्यसंवर्धन" विषय पर 30 अक्टूबर, से 1 नवम्बर तक ऑनलाइन मोड पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के गर्ग ने कहा कि इस प्रशिक्षण के माध्यम से पशुउत्पाद प्रसंस्करण संबंधित नई तकनीकों एवं नवाचारों को प्रसार कार्यकर्त्ताओं एवं फील्ड पशुचिकित्सकों के माध्यम से पशुपालकों तक पहुँचाने हेतु नये आयाम मिलेंगे। मूल्यसवंर्धित पशु उत्पाद जैसे दूध, चीज, घी, पनीर, श्रीखण्ड व अन्य उत्पाद बुनियादी पोषण प्रदान करने के अलावा कुछ अतिरिक्त स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करते हैं। वर्तमान में लोग अधिक से अधिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूक हो रहे हैं और स्वस्थ आहार को एक विकल्प के रूप में चुन रहे हैं। मूल्यसंवर्धित उत्पाद एक स्वास्थ्यप्रद आहार विकल्प होने के कारण कच्चे उत्पाद की तुलना में मूल्यसंवर्धित उत्पादों की मांग में वृद्धि हुई है। प्रसंस्कृत पशुधन उत्पादों को अधिक दूरी पर मौजूद बाजारों में बेचा जा सकता है। पशु उत्पादों का मूल्यसंवर्धन रोजगार एवं उद्यमिता विकास को बढ़ावा देता है और किसानों को पर्याप्त रिटर्न भी प्रदान करता है। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि पशु उत्पादों में मूल्य संवर्धन से युवाओं में उद्यमशीलता की प्रवृत्ति को भी बढ़ावा मिलता है, इसके लिए विशेष प्रशिक्षण और उद्यमिता विकास जैसे कार्यक्रमों की आवश्यकता है।

महात्मा गांधी की 154वीं जयंती के उपलक्ष पर स्वच्छता कार्यक्रम

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 154वीं जयंती के अवसर पर दिनांक 2 अक्टूबर को वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर की एन.सी.सी., राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों, शिक्षकों एंव कर्मचारियों ने महाविद्यालय परिसर को स्वच्छ बनाने हेतु श्रमदान किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने महात्मा गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी के आदर्शो को जीवन में अपनाने हेतु प्रेरित किया तथा साथ ही उन्होंने सत्य, अहिंसा, स्वच्छता, अनुशासन एवं देश प्रेम जैसे आदर्शो का विद्यार्थी जीवन में महत्व को बताया। कुलपति प्रो. गर्ग एवं डीन–डायरेक्टर ने महात्मा गांधी को याद करते हुए पुष्प अर्पित किये। कुलपति प्रो. गर्ग ने कहा कि महाविद्यालय परिसर को प्लास्टिक एवं प्रदूषण मुक्त बनाने हेतु हम सभी को सामूहिक एवं निरंतर प्रयास करने होंगे। इस अवसर पर कार्यवाहक अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीन बिश्नोई, विश्वविद्यालय के अधिकारी, शिक्षक, कर्मचारी एंव विद्यार्थी उपस्थित रहे और स्वच्छता कार्यक्रम में भागीदारी निभाई।

विद्यार्थियों ने समझा ई.वी.एम. एवं वी.वी. पेट मशीन का उपयोग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विद्यार्थियों ने 3 अक्टूबर को मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के तहत मतदान में उपयोग होने वाली ई.वी.एम. एवं वी.वी. पेट मशीन की विस्तृत जानकारी हासिल की। चुनाव शाखा, बीकानेर के सदस्य टीम द्वारा विद्यार्थियों को ई.वी.एम. एवं वी.वी. पेट मशीन की संपूर्ण कार्यप्रणाली को प्रदर्शन करके बताया गया। विद्यार्थियों ने स्वयं डेमो मतदान द्वारा प्रायोगिक ज्ञान हासिल किया। चुनाव शाखा, बीकानेर के गोपाल जोशी, बजरंग जाट, सुधीर मिश्रा, पवन खत्री एवं मोहम्मद आरिफ टीम सदस्यों द्वारा ई.वी.एम. मशीन द्वारा मतदान की संपूर्ण जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. अशोक डांगी की देख रेख में हुआ।

पी.जी. एकेडमिक रेगुलेशन 2023 हुआ लागू

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने दिनांक 3 अक्टूबर को राजुवास पी.जी. एकेडमिक रेगुलेशन – 2023 का विमोचन किया। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि पूरे विश्वविद्यालय हेतु सभी स्नातकोत्तर एव विद्यावाचस्पति विद्यार्थियों हेतु पी.जी. एकेडमिक रेगुलेशन दस्तावेज एक मार्गदर्शक पुस्तिका का कार्य करेगा जिसमें शोधार्थी, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों हेतु प्रवेश नियम, उपस्थिति, परीक्षा प्रणाली, गाईड निर्धारण एवं अन्य पी.जी. शैक्षणिक नियमों का पूर्ण विवरण है जो कि समय पर गुणात्मक शोध कार्यों को पूर्ण करने में सहायक सिद्ध होगी। प्रो. गर्ग ने बताया कि इस पी.जी. रेगुलेशन को राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 एवं आई.सी.ए.आर. की भारतीय राष्ट्रीय कोर समूह और बी.एस.एम.ए. एवं यू.जी.सी. की सिफारिशो को ध्यान में रखते हुए संशोधित किया गया है। अधिष्ठाता स्नातकोत्तर अध्ययन प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि यह दस्तावेज उच्च अध्ययन के लिए विद्यार्थियों को समय–समय पर उनकी जिम्मेदारियों के साथ–साथ सभी शैक्षणिक एवं शोध सम्बंधित दिशानिर्देशो को रेखांकित करता है। विमोचन कार्यक्रम के दौरान कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्त नियंत्रक बी.एल. सर्वा, कार्यवाहक अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त दाधीच, निदेशक पी.एम.ई. प्रो. बसन्त बेस, परीक्षा नियंत्रक प्रो. उर्मिला पानू, निदेशक एच.आर.डी. प्रो. बी.एन. श्रृंगी एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. प्रवीण बिश्नोई उपस्थित रहे।

स्वच्छता ही सेवा 2023 अभियान के अर्न्तगत वृहद सफाई कार्यक्रम

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में भारत सरकार के स्वच्छता पखवाड़ा स्वच्छता ही सेवा 2023 कार्यक्रम के अर्न्तगत 7 अक्टूबर को वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर परिसर में वृहद स्तर पर स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने बताया कि स्वच्छता पखवाड़ा के तहत विश्वविद्यालय की समस्त इकाईयों में इस अभियान को क्रियान्वयन किया जा रहा है। इस स्वच्छता अभियान में विश्वविद्यालय के समस्त डीन–डायरेक्टर, अधिकारी, कर्मचारी, शिक्षक, विद्यार्थी, संविदा एवं निविदा कार्मिक श्रमदान कर अपनी सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं। कुलपति प्रो. गर्ग ने बताया कि विश्वविद्यालय परिसर को स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त रखने के लिए इस स्वच्छता कार्यक्रम को भविष्य में भी जारी रखा जायेगा। अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रखना सभी कर्मचारियों की नैतिक जिम्मेदारी है।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गांव गाढवाला में स्वच्छता कार्यक्रम का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढवाला में 31 अक्टूबर को स्वच्छ भारत अभियान गोष्ठी का संस्कृत वरिष्ठ उपाध्याय विद्यालय, गाढवाला में आयोजन किया गया। जिसमें प्रसार शिक्षा विभाग की टीचिंग एसोसिएट डॉ. मैना कुमारी ने छात्र–छात्राओं को स्वास्थ्य, साफ–सफाई के महत्व के बारे में जागरूक किया। उन्होंने बताया कि व्यक्तिगत स्वच्छता और आस–पास के वातावरण की स्वच्छता कैसे रखें और हम कैसे बीमारियों से बच सकते हैं। सैटेलाइट अस्पताल के डॉ. विवेक गोस्वामी ने विभिन्न बीमारियों के बारे में विद्यार्थियों को बताया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा विभाग के डॉ. निर्मल, डॉ. मनीषा और डॉ. अभिषेक एवं प्रधानाध्यापक ताराचंद भी उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 4, 5, 10, 17 एवं 26 अक्टूबर को गांव चरला, बंधनाउ, सरोठिया, राघाबाड़ी एवं खरतवासिया गांवो में तथा 7 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 144 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 10, 13 एवं 17 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 28 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 141 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 13, 19, 21, 25 एवं 27 अक्टूबर को गांव हीगोंली, बिरहस, दहवा, पचोरा, अस्तावन कादिम एवं अस्तावन जाहिद गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 86 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 7, 28 एवं 30 अक्टूबर को गांव बारेमोली, रूपसपुर एवं सिंघावली गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में कुल 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 13, 16 एवं 19 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर तथा 25 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 9 एवं 30 अक्टूबर को गांव उथाउन, वीरा विलपुर एवं अंगोर गांवो में तथा 4 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 13, 16, 20, 21, 23 एवं 25 अक्टूबर को गांव राजास, गोविन्दी, ठिकरिया कलाम, लोहराणा, बनगढ़ एवं चोसला गांवों में तथा 28 एवं 30 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 9, 11, 12, 16 एवं 18 अक्टूबर को गांव रामखेड़ली, चन्द्रेसल, मण्डानिया, भांडाहेड़ा एवं आंवली गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 127 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 13, 16 एवं 21 अक्टूबर को गांव बनाड़, जाजरवाल एवं डागियावास गांवों में तथा 5 एवं 9 अक्टूबर को ऑनलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 124 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 21, 23 एवं 25 अक्टूबर को गांव रामा, गढ़ानाथजी एवं सालेरा गांवों में तथा दिनांक 11 एवं 26 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 138 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 10 एवं 13 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 3, 5 एवं 16 अक्टूबर को गांव नवलगढ़, डूमरा एवं गुढीवाला गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 111 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 5, 9 एवं 11 अक्टूबर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 10, 11, 13, 16, 17, 21, 27 एवं 28 अक्टूबर को गांव जोबनेर, बेगस, सरना डुगर, लालचन्दपुरा–झोटवाड़ा, रामसिंहपुरा, हरसोली, फुलेरा एवं केसर का बास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 3, 9, 16, 25 एवं 28 अक्टूबर को गांव चन्दूर, डोरडा, घासेडी, भारूरी तथा तवाब गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 116 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 4–7, 9–12, 18–21 एवं 27–30 अक्टूबर को केन्द्र परिसर में चार दिवसीय तथा दिनांक 13, 16, 17 एवं 28 अक्टूबर को गांव ढाणी नाहरावाली, सिकरोडी, रामसरा एवं रामगढ़ गांवो में एक दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 196 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

दूध से भी फैलते है पशुओं व मनुष्यों में रोग

दुग्ध से होने वाले रोग वह रोग है जो कि बिना पाश्च्यूरीकृत दूध या डेयरी उत्पादों के सेवन, संक्रमित पशुओं के संपर्क में आने या पशुओ के मल युक्त दूध के सेवन से हो सकता है, इसके अलावा बिना दस्ताने पहने डेयरी उत्पाद या कच्चे दूध के साथ काम करने से भी इस तरह के रोग हो सकते है। दूध से होने वाले रोगो का संचरण संक्रमित लोगों के संपर्क में आने से भी हो सकता है। जब कोई संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है तो यह रोग कई बार हवा के माध्यम से भी फैल सकता है। दूध से होने वाले रोग विश्व स्तर पर एक गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य चिंता का विषय है प्रत्येक वर्ष अनुमानित 2,43,000 लोग इन रोगो से मर जाते है जिनमें से अधिकतर पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे होते हैं। जीवाणु संक्रमित गायों या अन्य पशुओं, दूषित पानी या दूषित सतहों के संपर्क के माध्यम से दूध की आपूर्ति के समय प्रवेश कर सकते हैं। इसके अलावा दूध से होने वाले रोगो का प्रमुख कारण स्वच्छता की कमी है इसलिए स्वच्छता का ध्यान रखकर इन रोगो के प्रकोप को कम किया जा सकता है।

दुग्ध जनित रोग: संक्रमित दुग्ध अथवा दुग्ध उत्पादों के सेवन से होने वाले रोगों में क्षय रोग, ब्रुसेलोसिस, कैम्पिलोबैक्टीरियोसिस, लिस्टिरियोसिस, साल्मोनेलोसिस एवं डिप्थीरिया मुख्य है।

क्षय रोग: क्षय (तपेदिक) रोग माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस जीवाणु की वजह से होने वाला गंभीर रोग है जो मुख्यतया फेंफड़ों को प्रभावित करता है। इसके अलावा यह गुर्दे, मस्तिष्क और रीढ़ को भी प्रभावित करता है। तपेदिक के लक्षणों में खांसी के साथ खून आना, बुखार, थकान एवं वजन कम होना शामिल है। तपेदिक रोग से बचने के लिए दूध को हमेशा उबालकर ही काम में लेवें क्योंकि पाश्च्यूरीकत दूध में टी.बी के बैक्टीरिया जीवित नहीं रह पाते हैं।

ब्रुसेलोसिस: ब्रुसेलोसिस गंभीर जीवाणु जनित रोग है जो ब्रुसेला एर्बोटस जीवाणु के कारण होता है जो कि मुख्यतया गर्भपात का कारण बनता है। ब्रुसेलोसिस के लक्षणों में बुखार, थकान, मांसपेशियों में दर्द और जोड़ों का दर्द शामिल है।

कैम्पिलोबैक्टीरियोसिस: कच्चे दूध के सेवन से होने वाला यह जीवाणु जनित रोग कैम्पिलोबैक्टर जेजुनी नामक जीवाणु की वजह से होता है जिसके कारण संक्रमित व्यक्ति को बुखार, सिरदर्द, पेट में दर्द एवं खूनी दस्त जैसे लक्षण दिखाई देते है।

लिस्टिरियोसिस: लिस्टिरियोसिस संक्रमण भी एक प्रकार का खाद्य जनित संक्रमण है जो कि कच्चे दूध तथा कच्चे दूध के बने उत्पादों के सेवन की वजह से होता है। यह संक्रमण जीवाणु जनित है जो कि लिस्टिरिया मोनोसाइटोजेन्स जीवाणु की वजह से होता है जिसके कारण संक्रमित व्यक्ति को बुखार, मांस पेशियों में दर्द, जी मचलाना एवं दस्त हो जाती है और अगर ये रोग गंभीर हो जाये तो संक्रमित व्यक्ति को दौरे पड़ना एवं बेसुध हो जाना जैसे लक्षण दिखाई देते है।

साल्मोनेलोसिस: साल्मोनेला संक्रमण भी एक प्रकार का जीवाणु जनित संक्रमण है जो कि साल्मोनेला टाइफी जीवाणु की वजह से होता है। बिना पाश्च्यूरीकृत दूध के सेवन से यह संक्रमण फैलता है जिसके कारण संक्रमित व्यक्ति को बुखार, पेट में दर्द, जी मचलाना, उल्टी एवं दस्त जैसे लक्षण दिखाई देते है।

डिप्थीरिया: डिप्थीरिया जीवाणु जनित गंभीर रोग है जो कोरिनेबैक्टीरियम डिप्थीरिया नामक जीवाणु से होता है जिसकी वजह से बुखार, गले में खराश एवम् गर्दन में सूजन शामिल है। यह रोग संक्रमित व्यक्ति के बलगम के संपर्क में आने से फैलता है।

चूंकि हम जानते है कि दूध बच्चों एवं व्यस्कों के लिए उत्तम आहार है व दैनिक खान–पान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है इसलिए दूध से होने वाले रोगो से बचाव पर ध्यान देना काफी आवश्यक हो जाता है। अतः इन रोगो से बचाव निम्न प्रकार से कर सकते हैं।

- ❖ दूध से होने वाले रोगो से बचाव के लिए स्वच्छ दूध उत्पादन के तरीकों पर ध्यान दें।
- ❖ कच्चे दूध को अच्छी तरह उबालकर ही उपयोग में लेवे।
- ❖ बिना पाश्च्यूरीकृत दुग्ध / डेयरी उत्पादों के सेवन से परहेज करें।
- ❖ दूध से होने वाले रोगो से बचाव के लिए पशुओं का समय–समय पर टीकाकरण करवाएं।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

ग्याभिन पशुओं की देखभाल एवं प्रबंधन

गर्भधारण करने के बाद मादा पशु की देखभाल एवं प्रबंधन बहुत आवश्यक है। मादा पशु एवं नवजात बछड़े का स्वास्थ इसी बात पर निर्भर करता है की मादा पशु की देखभाल कैसी हुई है। पशु के ब्याने तक के समय को गर्भकाल का समय कहते हैं। मदचक्र का बन्द होना गर्भधारण की पहली पहचान होती है। गर्भधारण के बाद पशु का शरीर भी आकर में बढ़ने लगता है परन्तु कुछ भैंसों में शान्त मद होने के कारण गर्भधारण का पता ठीक प्रकार से नहीं लग पाता। अतः गर्भाधान के 21 वें दिन के आसपास मादा पशु का दोबारा मद में न आना गर्भधारण का संकेत मात्र है परन्तु यह भी कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। अत पशुपालक गर्भाधारण के दो महीने बाद पशुचिकित्सक द्वारा गर्भ जाँच करवानी चाहिए। गर्भकाल के शुरुआत के तीन एवं अंतिम तीन महीने मादा पशु का ध्यान रखना बहुत जरुरी है ग्याभिन पशुओ की देखभाल पोषण प्रबन्ध एवं आवास प्रबन्ध पर निर्भर करता है।

पशुओं का पोषण प्रबन्ध :

ग्याभिन पशुओं में पोषण का बहुत महत्व है। मादा पशु को अपने जीवनयापन व दूध देने के अतिरिक्त मादा एवं नवजात बछड़े के शारीरिक विकास के लिए भी पोषक तत्वों और ऊर्जा की आवश्यकता होती है। गर्भावस्था के अंतिम तीन महीनों में बछड़े की शारीरिक वृद्धि ज्यादा होती है इसलिए मादा पशु को अंतिम तीन महीने में अधिक पोषक आहार देना चाहिए इसी समय मादा पशु अगले ब्यांत में अच्छा दूध दे ये इसी पर निर्भर करता है की पशुओ को पोषक आहार उचित मात्रा में उपलब्ध कराया गया है या नहीं। यदि इस समय खानपान में कोइ कमी रह जाती है तो निम्नलिखित परेशानियाँ हो सकती हैं बछड़ा कमजोर पैदा होता है तथा वह अंधा भी रह सकता है।

- ➢ मादा पशु शरीर फूल दिखा सकती है।
- ➢ प्रसव उपरांत दुग्ध ज्वर मिल्क फीवर दूध हो सकता है।
- ➢ जेर रूक सकती है या देर से जेर का डालना।
- ➢ मादा पशु की बच्चेदानी में मवाद पड़ सकती है तथा ब्यांत का दूध उत्पादन भी काफी घट सकता है।

गर्भावस्था के समय मादा पशु का विशेष रूप से ख्याल रखना तथा उचित पोषण देना चाहिए। दाने में 40–50 ग्राम खनिज लवण मिश्रण अवश्य मिलाना चाहिए। हरा चारा दिन में 40–50 किलोग्राम एवं हरे चारे में बरसीम, ज्वार और मक्की का प्रयोग कर सकते हैं। पशु को 3–4 किलोग्राम दाना देना चाहिए जिसमे मक्का, गेहू एवं बाजरा तथा सरसों की खल का मुख्यतः प्रयोग कर सकते है। पशु के चारे में 40–50 ग्राम खनिज मिश्रण का प्रयोग करना चाहिए। गर्मियों में पशु को पीने का पानी हर समय उपलब्ध होना चाहिए।

पशुओं का आवास प्रबन्ध :

ग्याभिन पशु को आठवे महीने के बाद अन्य पशुओं से अलग रखना चाहिए। पशु का बाड़ा उबड़–खाबड़ तथा फिसलन वाला नहीं होना चाहिए। बाड़ा ऐसा होना चाहिए जो वातावरण की खराब परिस्थितियों जैसे अत्याधिक सर्दी, गर्मी और बरसात से मादा पशु को बचाया जा सके और साथ में हवादार भी हो। आवास में कच्चा फर्श अवश्य हो तथा फर्श का ढलान निकासी की नाली की तरफ होना चाहिए। पशु के आवास में सीलन नहीं होनी चाहिए। स्वच्छ पीने के पानी का प्रबन्ध हर समय आवास में होना चाहिए। गर्मियों के दिनों में पशु के आवास में पँखा या कूलर का प्रयोग कर सकते हैं। सर्दियों के मौसम में पशु को सर्दी से बचने के लिए पर्दो का प्रयोग कर सकते है।

पशुओं का सामान्य प्रबन्ध :

मादा पशु अगर दूध दे रही हो तो ब्याने के दो महीने पहले उसका दूध निकालना बंद कर देना चाहिए तथा समय–समय पर थानों को खाली करते रहे,जिससे थनैला रोग होने की संभावना कम होगी एवं अगले ब्यांत में उत्पादन भी बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त उसे लम्बी दूरी तक पैदल नहीं चलाना चाहिए। पशु के गर्भधारण की तिथि व उसके अनुसार प्रसव की अनुमानित तिथि को घर के कैलेण्डर में प्रमुखता से लिख कर रखना चाहिये। ग्याभिन पशु को उचित मात्रा में सूर्य का प्रकाश मिल सके इसका अवश्य ध्यान रखना चाहिए। सूर्य की रोशनी से पशु के शरीर में विटामिन डी बनता है जो कैल्शियम के संग्रहण में सहायक है जिससे पशु को ब्यानें के उपरांत दुग्ध ज्वर बचाया जा सकता है। गर्भावस्था के अंतिम माह में पशु चिकित्सक से विटामिन ई व सिलेनियम का टीका लगवाना चाहिए। पशु के ब्याने के लक्षण भी पशुपालक भाइयों को पता होने चाहिए जो इस प्रकार है पशु का बार–बार पूंछ का ऊपर उठाना।

- ❖ पशु का बार–बार उठना बैठना एवं पशु का दूसरे पशुओं से अलग हो जाना।
- ❖ थनों का दूध का टपकना या थनों का सख्त हो जाना।
- ❖ पशु का कम चारा खाना या कुछ समय के लिए चारे का सेवन कम करना।
- ❖ पशु के जननांग में तरल पदार्थ का रिसाव होना एवं पुट्ठे टूटना यानि की पूंछ के आस पास मांसपेशियों का ढिला हो जाना।

डॉ. प्रमोद कुमार, डॉ. विनय कुमार
पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशुओं में परजीवी संक्रमण का हर्बल उपचार

परजीवी संक्रमण घरेलू और जंगली दोनों तरह के जानवरों के स्वास्थ्य के लिए एक खतरा है। ये परजीवी किसी जानवर के लिए हल्की से लेकर गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं पैदा कर सकते हैं। इनके उपचार हेतु एलोपैथिक पशुचिकित्सा दवाएं उपलब्ध है, फिर भी जानवरों में परजीवी संक्रमण के प्रबंधन के लिए प्राकृतिक और समग्र दृष्टिकोण के रूप में हर्बल उपचार में रुचि बढ़ रही है। पारंपरिक चिकित्सा में सदियों से मनुष्यों और जानवरों के लिए हर्बल उपचारों का उपयोग किया जाता रहा है। उनकी प्राकृतिक उत्पत्ति, न्यूनतम दुष्प्रभाव और फार्मास्युटिकल विकल्पों की तुलना में कम लागत में महत्व निहित है। इसके अतिरिक्त जैसे–जैसे लोग पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं और टिकाऊ विकल्प तलाश रहे हैं, जानवरों का हर्बल उपचार दुनिया में लोकप्रियता हासिल कर रहा है।

सामान्य परजीवी संक्रमण: हर्बल उपचार देने से पहले, जानवरों को प्रभावित करने वाले कुछ सामान्य परजीवी संक्रमणों को समझना आवश्यक है:

पिस्सू और टिक्स: ये खून चूसने वाले परजीवी गंभीर खुजली, त्वचा में जलन पैदा कर सकते हैं और पालतू जानवरों में बीमारियाँ फैला सकते हैं।

आंतों के कीड़े: राउंडवॉर्म, टेपवर्म और हुकवर्म श्वानों और बिल्लियों के लिए एक आम परेशानी हैं, जो पाचन संबंधी समस्याएं और कुपोषण का कारण बनते हैं।

हार्टवॉर्म: श्वानों को प्रभावित करने वाले हार्टवॉर्म का अगर उपचार न किया जाए तो यह घातक हो सकता है, जिससे हृदय और फेफड़ों को नुकसान हो सकता है।

घुन: कान के कण (इयर माइटस), सरकोप्टिक मैंज माइट्स और डेमोडेक्स माइट्स पालतू जानवरों में त्वचा में जलन और बालों के झड़ने का कारण बन सकते हैं।

आंतरिक परजीवी: जिआर्डिया एवं कोक्सीडिया जैसे प्रोटोजोआ दस्त और पाचन संबंधी परेशानी का कारण बन सकते हैं।

परजीवी संक्रमण के लिए हर्बल उपचार रू

नीम का तेल: नीम का तेल एक शक्तिशाली प्राकृतिक कीट विकर्षक है जो पिस्सू और टिक्स को दूर कर सकता है। इसे वाहक तेल के साथ पतला किया जा सकता है और पालतू जानवर के कोट पर लगाया जा सकता है।

लहसुन: लहसुन अपने प्राकृतिक परजीवी विरोधी गुणों के लिए जाना जाता है। अपने पालतू जानवर के आहार में थोड़ी मात्रा में लहसुन शामिल करने से पिस्सू और टिक्स को दूर रखने में मदद मिलती है।

डायटोमेसियस अर्थ: जीवाश्म शैवाल से प्राप्त यह महीन पाउडर, पिस्सू और टिक्स को नियंत्रित करने में मदद करने के लिए आपके पालतू जानवर के फर और बिस्तर पर छिड़का जा सकता है। यह परजीवियों को निर्जलित करके काम करता है।

वर्मवुड: वर्मवुड परजीवी–रोधी गुणों वाली एक जड़ी–बूटी है और इसका उपयोग पशुचिकित्सक के परामर्श से अक्सर पालतू जानवरों में आंतों के कीड़ों के इलाज के लिए किया जाता है।

कद्दू के बीज: कद्दू के बीज में कुकुर्बिटासिन नामक एक प्राकृतिक कृमिनाशक यौगिक होता है। अपने पालतू जानवर को थोड़ी मात्रा में कुचले हुए कद्दू के बीज खिलाने से आंतों के कीड़ों को खत्म करने में मदद मिल सकती है।

हल्दी: अपने सूजनरोधी गुणों के लिए जानी जाने वाली हल्दी परजीवी संक्रमण से जुड़े कुछ लक्षणों को कम करने में मदद कर सकती है।

एलोवेरा: एलोवेरा जेल घुन और अन्य बाहरी परजीवियों के कारण त्वचा पर होने वाली खुजली को शांत कर सकता है।

सावधानियाँ : हालाँकि हर्बल उपचार प्रभावी हो सकते हैं, लेकिन अपने पालतू जानवरों पर किसी भी हर्बल उपचार का उपयोग करने से पहले पशुचिकित्सक से परामर्श करना महत्वपूर्ण है। सभी जड़ी–बूटियाँ सभी जानवरों के लिए सुरक्षित नहीं हैं, और खुराक को सावधानीपूर्वक नियंत्रित करने की आवश्यकता है। कुछ हर्बल उपचार मौजूदा दवाओं या स्वास्थ्य स्थितियों के साथ भी परस्पर क्रिया कर सकते हैं। जानवरों में परजीवी संक्रमण का हर्बल उपचार लोकप्रियता हासिल कर रहा है क्योंकि लोग पालतू जानवरों और पशुओं की देखभाल के लिए प्राकृतिक और समग्र दृष्टिकोण चाहते हैं। हालाँकि जड़ी–बूटियाँ आंतरिक और बाहरी दोनों परजीवियों की रोकथाम और उपचार में प्रभावी हो सकती हैं, लेकिन उनका उपयोग जिम्मेदारी से और विशेषज्ञ की सलाह के साथ करना महत्वपूर्ण है। प्रकृति के उपचारों की शक्ति का उपयोग करके, हम पारंपरिक रासायनिक उपचारों पर अपनी निर्भरता को कम करते हुए अपने पालतू जानवरों को खुशहाल, स्वस्थ जीवन जीने में मदद कर सकते हैं।

डॉ. महेन्द्र सिंह मील
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियां, उदयपुर

सफलता की कहानी

कृष्णलाल झाझड़ीया ने श्रीगंगानगर में स्थापित की डेयरी प्रसंस्करण इकाई

श्रीगंगानगर तहसील के छोटे से गांव ततारसर के रहने वाले कृष्णलाल झाझड़ीया ने बी.एस.सी. एग्रीक्लचर की पढ़ाई करने के बाद खेती बाड़ी के साथ 10 जर्सी और 2 एच.एफ. गायों को पालना शुरू किया। पढ़े लिखे होने के साथ अपने पुत्र को भी बी.सी.ए. की पढ़ाई के बाद इस क्षेत्र में अपने साथ रखा फिर कृष्ण लाल ने कहीं से जानकारी प्राप्त कर अपने पुत्र को डूगंरपूर की मेवाड़ डेयरी में काम लगवाया तथा वहां से उन्होंने प्रेरणा लेकर श्रीगंगानगर क्षेत्र के पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के अधिकारियों से सम्पर्क में दूध प्रसंस्करण करने हेतू पाश्च्युरीकरण, चीलींग, पैकजींग, वैल्यू एडीसन, पनीर, छाछ, घी इत्यादि की जानकारियां प्राप्त की। कृष्णलाल बताते है कि हमें समय–समय पर इसके बारे में जानकारी मिलती रहती है दुध व उनके उत्पादों की गुणवता जांचने हेतु पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ के प्रयोगशाला विशेषज्ञ से भी मिलते रहते हैं और इस प्लांट के तकनीकी सहायता के लिए सम्पूर्ण श्रेय पशु विज्ञान केन्द्र (राजुवास) को देते है इन्होंने अपने क्षेत्र में दूध की मांग को देखते हुए डेयरी प्रसस्करण इकाई स्थापित कर अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर यह प्लांट स्थापित किया जिसमें इन्होंने 1000 लीटर क्षमता का प्लांट स्थापित किया जिसमें शुरूआत में 100 लीटर दूध प्रोसेसिंग करते थे। वर्तमान में 3200 लीटर दूध को अपने प्लांट में दुध (40 रू), छाछ, दही एवं घी (650 रू) के हिसाब से श्रीगंगानगर क्षेत्र के बाजार में बेचते है तथा इन्होंने राजस्थान एग्रीक्लचर प्रोग्राम पॉलिसी 2019 (राजस्थान सरकार) द्वारा 32 लाख का प्रोजेक्ट स्थापित किया जिसमें इनको 50 प्रतिशत अनुदान राज्य सरकार द्वारा मिला है। अभी वर्तमान में महीने की लगभग 2 लाख रूपये की आमदनी कर रहे हैं। कृष्णलाल बताते है कि भविष्य में घी, दूध की टेट्रापेकींग और मेट्रो सिटीज में ऑरगेनिक मिल्क उत्पाद अपने प्लांट में इकाई स्थापित करने वाले है अपने प्लांट कि सम्पूर्ण सफलता का श्रेय अपनी कड़ी मेहनत व परिवार का सहयोग साथ ही पशु विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों व मेवाड़ डेयरी फार्म को देते हैं।

सम्पर्क- कृष्णलाल झाझड़ीया,
गांव ततारसर, तहसील व जिला श्रीगंगानगर मो. : 9829251919

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	बहुत कम संभावना
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	अलवर, बाड़मेर, बीकानेर, चित्तौड़गढ़, गंगानगर, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर, पाली
एन्टेरोटोक्सिमिया	भेड़, बकरी	–	–	भीलवाड़ा, गंगानगर, जालौर, टोंक
खुरपका मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	–	–	अजमेर, अलवर, बाड़मेर, बीकानेर, चित्तौड़गढ़,, डूंगरपुर, जैसलमेर, जालौर, जोधपुर, प्रतापगढ़, राजसमन्द, उदयपुर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस,	–	–	बूंदी, जयपुर, जोधपुर, नागौर, प्रतापगढ़, सीकर, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	उदयपुर	चूरू	अजमेर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, धौलपुर, डूंगरपूर, गंगानगर, जयपुर, जैसलमेर, जालौर, झालावाड़, झुंझुनू, जोधपुर, करौली, नागौर, पाली, हनुमानगढ़, प्रतापगढ़, सवाई, माधोपुर, सीकर, सिरोही, टोंक
थीलेरिओसिस	गाय, भैंस	–	–	कोटा
ट्रीपोनोसोमियोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	–	–	बूंदी, प्रतापगढ़
भेड़ एवं बकरी माता रोग	भेड़, बकरी	–	–	करौली

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

ग्रामीण क्षेत्रों में बैकयार्ड कुक्कुट पालन: कम लागत में बेहतर विकल्प

कृषि व पशुपालन भारत की अनमोल धरोहर है। मनुष्य प्राचीन काल से ही पशुपालन पर निर्भर रहा है। पिछले चार दशकों में देश में पशुपालन एवं उत्पादन में जबरदस्त वृद्धि हुई है, जिसमें गौपालन, भैंस पालन, भेड़ व बकरी पालन तथा मुर्गीपालन प्रमुख है, परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में मुर्गीपालन व्यवसाय अभी भी पिछड़ा हुआ है जिसके कारण कुक्कुट उत्पादों की उपलब्धता एवं मांग में काफी अन्तर है। देश में मुर्गीपालन तेजी से बढ़ता हुआ व्यवसाय है जो कि खाद्य सुरक्षा के साथ–साथ आर्थिक उन्नति में भी सहायक है। यह व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं एवं बच्चों में कुपोषण की समस्या से निजात दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है तथा महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण भी प्रदान करता है। शहरी क्षेत्रों में देशी अण्डों की बढ़ती मांग को ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादन कर पूरा किया जा सकता है। बैकयार्ड मुर्गीपालन कम लागत में शुरू किया जाने वाला व्यवसाय है जिसे ग्रामीण क्षेत्रों के बेरोजगार युवा आसानी से अपना सकते हैं तथा मुनाफा भी अच्छा रहता है। घर के पिछवाड़े में छोटे स्थान पर मुर्गियों को घरेलू श्रम और स्थानीय उपलब्ध दाना–पानी का उपयोग करते हुए कम से कम आर्थिक व्यय में कुक्कुट पालन शुरू किया जा सकता है। बैकयार्ड मुर्गीपालन आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों, गरीब किसानों, ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक स्वावलम्बन प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। मुर्गीपालन कम लागत में किया जाने वाला व्यवसाय है जिसमें मुर्गियां आहार के रूप में हरे चारे, घर की बची हुई सब्जियों के छिलके, अनाज कीड़े–मकोड़े आदि खाकर जीवनयापन करती है, लेकिन अधिक उत्पादन के लिए इन मुर्गियों को अतिरिक्त आहार जैसे– मक्का, बाजरा व चावल आदि दे सकते हैं। बैकयार्ड मुर्गीपालन में रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ–साथ प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने की क्षमता भी अधिक होती है। अतः राजस्थान के गरीब ग्रामीण परिवार व युवा बेरोजगार कम लागत वाले इस व्यवसाय को शुरू कर आर्थिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''

पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम

माह के तीसरे गुरुवार को

सायं 5.30 से 6.00 बजे तक

प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए

टोल फ्री हैल्पलाईन

1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/ विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।।